

# ऋग्वेद

मण्डल १०

सूक्त १९०

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

## Rigveda

Maṇḍala 10

Sukta 190

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

इस सूक्त में सृष्टि की रचना का क्रम बताया गया है। सृष्टि की पुनः रचना के लिए, पुरानी सृष्टि का विध्वंस कर ईश्वर ने सभी आवेशित कणों को महाप्रलय रूपी समुद्र में इकट्ठा किया। पहले नई सृष्टि की योजना बनाई। ऐसे नियम बनाए जिनसे सृष्टि सुचारू रूप से अपने आप चलती रहे। और फिर इस योजना को साकार रूप दिया। हमें यह भी पता लगता है की सृष्टि निर्माण का चक्र निरन्तर है और पहले की भांति आगे भी विध्वंस और सृजन का चक्र चलता रहेगा।

Synopsis

This composition clarifies the process of creation of this Universe. God destroys the old Universe to make way for the new. The remains of the old universe are brought together in a humungous cosmic soup. God then creates a plan for the new Universe. He also creates system for automated and smooth running of the universe. The plan is then put into life. We learn that the process of destruction and creation is cyclical and in future there will be more of these cycles.

ऋषिः - अघमर्षणः | देवताः - भाववक्रत्तम् |

छन्दः - १ विराडनुष्टुप् २ अनुष्टुप् ३ पादनिचृदनुष्टुप् |

ṛiṣhiḥ - aghamarṣhaṇaḥ. devataaḥ - bhaavavṛittam

chhandah - 1 viraadanuṣṭup 2 anuṣṭup 3 paadanichṛidanuṣṭup

ऋतं च सत्यं चाभीद्वात्तपसोऽध्यजायत ।

ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥ १ ॥

ऋग् १०:१९०:१

ऋतम् च सत्यम् च अभिऽइद्वात् तपसः अधि अजायत ।

ततः रात्री अजायत ततः समुद्रः अर्णवः ॥

इस सृष्टि की रचना से पहले ईश्वर ने अपने (अभि) सभी ओर से (इद्वात्) प्रकाशित (तपसः) ज्ञान के (अधि) आधार पर संसार को चलाने के लिए (ऋतम्) शाश्वत (च) व (सत्यम्) सत्य नियमों का (अजायत) निर्माण किया । (च) और (ततः) फिर (अर्णवः) आवेशित कणों का महाप्रलय के समान एक विशाल (समुद्रः) समुद्र (अजायत) बनाया । (ततः) इस समय भयंकर (रात्री) रात्री के समान अन्धकार था ।

ऋत सत्य के सहारे संसार को सजाया । तेरा महान कौशल है सिन्धु ने दिखाया ॥

### 1. Om ṛitañ cha satyañ cha-abhe-eddhaat tapaso'dhy-ajaayata

tato raatry-ajaayata tataḥ samudro arṇavaḥ

Rig 10.190.1

(cha) In the beginning, God (adhy) based on his (tapaso) wisdom and knowledge that was (eddhaat) illuminated from (abhe) all direction, (ajaayata) created the (ṛitañ) eternal (cha) and (satyañ) true laws to govern the creation and functioning of the cosmos. He (tato) then (ajaayata) created a huge (samudro) ocean of (arṇavaḥ) agitated particles. At this time (tataḥ) there was total darkness like a (raatry) night.

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत ।

अहोरात्राणि विदध्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ २ ॥

ऋग् १०:१९०:२

समुद्रात् अर्णवात् अधि संवत्सरः अजायत ।

अहोरात्राणि विऽअदधत् विश्वस्य मिषतः वशी ॥

(अधि) उसके बाद एक कुशल अभियन्ता की भांति, ईश्वर ने (विश्वस्य) संसार को (मिषतः) सुगमता के (वशी) वश में रखने के लिए, उस (अर्णवात्) आवेशित कणों के (समुद्रात्) महा

समुद्र से बनने वाले ग्रह नक्षत्रों के लिए काल क्रम, जिसमें (अहो) दिन, (रात्राणि) रात व (संवत्सरः) सम्बत आदि, का (विऽअदधत्) विधान (अजायत) किया ।

पहले के कल्प जैसे, रवि चन्द्र फिर बनाए । दिन रात पक्ष संवत, मे काल क्रम चलाए ॥

## 2. Om samudraad-arṇavaad-adhi samvatsaro ajaayata

aho-raatraaṇi vi-dadhad vishvasya miṣhato vashee Rig 10.190.2

(adhi) After that, like an architect, in order to devise a self sustaining system that (vashee) controls and maintains the (miṣhato) smooth movement of the celestial bodies in the (vishvasya) Universe that would be created from that (samudraad) ocean of (arṇavaad) agitated particles, God (ajaayata) devised the (vi-dadhad) concept of time that consisted of various relative measures of time like (aho) day, (raatraaṇi) night and (samvatsaro) year.

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।

दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥ ३ ॥

ऋग् १०:१९०:३

सूर्या चन्द्रम् असौ धाता यथापूर्वम् अकल्पयत् ।

दिवम् च पृथिवीम् च अन्तरिक्षम् अथो इति स्वः ॥

(अथो) इसके बाद (धाता) ईश्वर ने (पूर्वम्) पहले की (यथा) भांति (दिवम्) द्युलोक को (अकल्पयत्) रचा, (सूर्या) सूर्य (चन्द्रम्) चन्द्र (असौ) आदि की रचना की, (पृथिवीम्) पृथिवी को रचा, सौरमण्डल के बाहर अन्य (स्वः) लोकान्तरों को रचा और इन सभी के बीच का (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष भी बनाया ।

द्यौ अन्तरिक्ष धरनी, नित नेम पर टिकाए ।

तूरम रहा सभी मे, तुझमे सभी समाए ॥

## 3. Om sooryaa-chandram-asau dhaataa yathaa-poorvam akalpayat

divaṇ cha prithiveeṇ cha-antarikṣham-atho svaḥ Rig 10.190.3

(atho) After this, (yathaa) like (poorvam) before, (dhaataa) God (akalpayat) created the (divaṇ) celestial realm, the (sooryaa) sun (cha) and (chandram) moon (asau) etc., the (prithiveeṇ) earth, (svaḥ) star systems away from the Solar system (cha) and the (antarikṣham) space between all of these celestial bodies.